नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

व्यापार की शतरंज में भारत की सतर्क चालें!

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की व्यापार नीति, खासकर टैरिफ को लेकर उनका आक्रामक रुख, वैश्विक व्यापार पर एक बार फिर दबाव बना रहा है. 14 देशों पर थोपे गए नए टैरिफ और ब्रिक्स देशों के लिए अतिरिक्त शुल्क की चेतावनी के बीच भारत के लिए यह समय एक निर्णायक मोड़ है. विशेषकर तब, जब भारत को 26 फीसदी टैरिफ से पूर्ण छूट की उम्मीद है और अमेरिका से चल रही वार्ताएं एक अंतरिम समझौते की ओर बढ़ रही हैं. ट्रंप की नीति स्पष्ट है—टैरिफ के ज़रिए सौदेबाजी का दबाव और 'अमेरिका फर्स्ट' की नीति को आक्रामक ढंग से आगे बढ़ाना. लेकिन भारत ने भी एक परिपक्व और रणनीतिक रुख अपनाया है. प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान शुरू हुई व्यापार वार्ता को आगे बढ़ाने का प्रयास हो रहा है, पर भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि वह 'किसी भी कीमत पर' समझौता नहीं करेगा.

वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल का वक्तव्य इस संदर्भ में बेहद महत्वपूर्ण है- 'देशहित पहले.' यह नारा न केवल राजनीतिक तौर पर सटीक है, बल्कि नीति निर्माण के स्तर पर भी इसका ठोस असर दिख रहा है. भारत कृषि और डेयरी क्षेत्रों को लेकर अडिग है, और यह बिल्कुल उचित है. करोड़ों किसानों की आजीविका इन क्षेत्रों से जुड़ी है. अमेरिका की मांगों के सामने यदि भारत इन संवेदनशील क्षेत्रों को खोलता है, तो यह एक आर्थिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक त्रासदी को न्योता देने जैसा होगा. भारत ने अब तक किसी देश के साथ कृषि क्षेत्र नहीं खोला है- यह तथ्य अपने आप में नीति की गंभीरता को दर्शाता है. ऐसे समय में जबकि ट्रंप सरकार ने यूनाइटेड किंगडम और चीन जैसे देशों से सौदे किए हैं, भारत के सामने यह विकल्प है कि वह अंतरराष्ट्रीय दबाव में आकर कोई असमय और असंतुलित समझौता न करे.

इस समय अमेरिका भारत से यह अपेक्षा कर रहा है कि वह इस्पात, एल्युमिनियम और ऑटोमोबाइल क्षेत्र में टैरिफ राहत दे, जबकि बदले में कृषि और डेयरी जैसे संरक्षित क्षेत्रों में अमेरिकी उत्पादों को रास्ता दे. यह व्यापार संतुलन नहीं, बल्कि एकतरफा लाभ का मॉडल है—जिसे भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए स्वीकार करना संभव नहीं है. भारत को चाहिए कि वह टैरिफ के इस संकट को सिर्फ व्यापारिक विवाद न माने, बल्कि इसे नीतिगत स्वतंत्रता और आर्थिक आत्मनिर्भरता के प्रश्न के रूप में देखे. अमेरिका की 'समयसीमा की तलवार' भारत को डराने के लिए है, लेकिन इससे झुकना नहीं, संवाद से संतुलन बनाना ही हमारे लिए श्रेयस्कर होगा.

भारत के पास अब दो स्पष्ट विकल्प हैं—या तो वह '90 दिन की समयसीमा' और 'टैरिफ की धमकी' से घबराकर समझौते की दिशा में तेजी दिखाए, या वह रणनीतिक धैर्य रखते हुए अमेरिका के साथ संतुलित और सम्मानजनक समझौते की प्रतीक्षा करे. ट्रंप प्रशासन बार-बार यह संकेत दे रहा है कि वह किसी भी समय अपनी नीति में बदलाव कर सकता है, बशर्ते दूसरा पक्ष फ्फोन करके कुछ अलग करने की बात करेफ्. यह अनिश्चितता, यह द्वंद्वात्मकता ही अमेरिका की रणनीति का हिस्सा है, जिससे भारत को सावधान रहना होगा.यह ध्यान रखना होगा कि भारत का व्यापारिक भविष्य उसकी आत्मनिर्भरता, रणनीतिक धैर्य और घरेलू हितों की रक्षा पर टिका है,न कि किसी तात्कालिक छूट या धमकी के सामने समझौते पर. व्यापार की इस वैश्विक शतरंज में भारत को हर चाल सोच-समझकर चलनी होगी, ताकि उसका किसान, उसका उद्योग और उसकी अर्थव्यवस्था सुरक्षित भी रहे और आगे भी बढ़े.

राष्ट्रभक्ति के जुनून का दूसरा नाम है अभाविप

77 वे स्थापना दिवस पर विशेष

सुरेंद्र शर्मा
प्रदेश कार्य समिति सदस्य
भारतीय जनता पार्टी मध्य प्रदेश

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद भारत ही नहीं विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन आज जिसके 60 लाख से अधिक सदस्य हैं देश भर में 6 हजार से अधिक परिसर इकाइयां हैं.अभाविप नाम आते ही स्मृति पटल पर एक तस्वीर उभर कर आती है ऐसे छात्र-छात्राओं की जिनके लिए देश सर्वोपरि है जो समाज के लिए कुछ अलग हट कर करना चाहते हैं जिनके मन में संकल्प होता है शिक्षा जीवन के लिए जीवन वतन के लिये देश में राष्ट्रभक्ति के जज्बा जोश और जुनून का नाम है अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद.

उद्देश्य सही हो लक्ष्य स्पष्ट हो एवं कार्य करने की दिशा ठीक हो तो कोई भी कार्य आसानी से किया जा सकता है कार्य का परिणाम तो ठीक होता ही है कार्य भी यशस्वी होता है इन्हीं विशेषताओं के साथ राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ में शिक्षा क्षेत्र में काम करने वाले छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थापना आज ही के दिन अर्थात 9 जुलाई 1949 को हुई थी.

ज्ञान !शील ! !एकता ! ! की अपनी विशेषता के साथ अभाविप विगत 76 वर्षों से अपनी 60 लाख से अधिक सदस्यता 3000 से अधिक स्थानों पर 6000 से अधिक परिसरों में कार्य करते हुए निस्संदेह भारत ही नहीं विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन के रूप में स्थापित हुआ है. अपनी कार्यपद्धति की अनेक विशेषताओं के कारण अभाविप ने छात्र संगठन का एक पृथक दर्शन विकसित किया है. शैक्षिक परिवार की एक अभिनव कल्पना भी अभाविप ने देश के सामने रखी है परिषद के स्थापना काल के समय एवं उसके बाद भी समाज के कुछ लोगों एवं संगठनों के मन में यह विचार था कि छात्र एवं शिक्षक इनमें परस्पर द्वंद है परंतु अभाविप ने शिक्षा परिवार जिसमें छात्र शिक्षक शिक्षाविद शामिल हैं की एक नई सोच समाज के सम्मुख रखी है द्वंद्व के स्थान पर सहकार करते हुए संपूर्ण देश में हजारों प्राध्यापक परिषद कार्य करते हुए शिक्षा जगत में अपनी उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं.

प्रोफेसर वेद प्रकाश नंदा से लेकर आचार्य गिरिराज किशोर(जो राष्ट्रीय अध्यक्ष बाद अभाविप में प्रथम पूर्णकालिक निकले) दत्ता जी डिंडोलकर,प्राध्यापक यशवंत राव केलकर,राजकुमार जी भाटिया ,डॉक्टर डी मनोहर राव,प्रोफेसर पी व्ही कृष्ण भट्ट,डॉक्टर कैलाश शर्मा ,मिलिंद मराठे, एवं वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राज शरण शाही जैसे हजारों ज्येष्ठ और श्रेष्ठ प्राध्यापकों ने छात्रों के साथ कदम ताल करते हुए अभाविप का नेतृत्व किया एवं छात्र संगठन को ऊंचाइयों तक पहुंचाया.छात्र शिक्षक एवं शिक्षाविद की त्रिवेणी का संगम अभाविप के अंदर अद्भुत एवं अनूठा है.

रचनात्मक दृष्टिकोण एवं उसके फल स्वरुप रचनात्मक कार्य करने की इच्छा शक्ति भी अभाविप ने छात्रों के अंदर विकसित की है छात्र जिसे प्राय: उद्दंड समझा जाता था उसकी इस प्रकार की छवि को बदलते हुए उसकी सोच विध्वंस की नहीं रचनात्मक है यह अभाविप ने अपने कार्यों से कर दिखाया है आज वृक्षारोपण रक्तदान अभाविप के नियमित कार्यक्रम है जो संपूर्ण देश में होते हैं. जब भी देश पर संकट आया अभाविप के कार्यकर्ताओं ने अपनी सेवाएं देश को दीं ,चाहे वह 1971 के भारत-पाक युद्ध के समय आंतरिक प्रतिरक्षा में सहयोगिता हो महाराष्ट्र गुजरात के भूकंप हों या देश के किसी भी हिस्से में आपदा आई हो या कोरोना जैसी भयानक महामारी हो पीड़ितों की मदद करने में अभाविप के कार्यकर्ता सबसे आगे रहे.

मुझे मुझे स्मरण है जब में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का प्रदेश का संगठन मंत्री था उस समय सुनामी इस देश के कुछ राज्यों में आई थी मध्य प्रदेश के छात्र संघ जिनमें अधिकांश पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के ही कार्यकर्ता विजय हुए थे वार्षिक सम्मेलनों की राशि संपूर्ण प्रदेश से लगभग 11 लाख प्रधानमंत्री राहत कोष में दान देकर अपनी इसी रचनात्मक दृष्टि का परिचय दिया था. देश में ऐसे अनेक अवसर आए हैं जब अभाविप के कार्यकर्ताओं ने अपनी राष्ट्रीय सोच और अनुशासन को प्रमाणित किया है 26 नवंबर 2002 को दिल्ली में शिक्षा एवं रोजगार की मांग को लेकर हुई रैली में आए सभी 75000 कार्यकर्ता अनुशासित तो थे ही इसके साथ-साथ दिल्ली में आए सभी लोग या तो अपने निजी वाहनों से आए थे या फिर रेल का टिकट खरीद कर. रैली में भी रेल का टिकट लेकर आना एक प्रकार से संभव दिखने वाले कार्य को करने की क्षमताओं छात्रों के अंदर अभाविप ने पैदा की है.

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने समाज के अंदर यह भी साबित करके दिखाया है की राजनीति की बैसाखी के बिना भी समाज का कार्यकिया जा सकता है एवं एक मजबूत संगठन खड़ा किया जा सकता है, इस दृष्टि से अभाविप ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है.

खंडेलवाल मुख्यमंत्री मोहन यादव के थे पहली पसंद

लो प्रोफाइल... हाई पावर! हेमंत खंडेलवाल

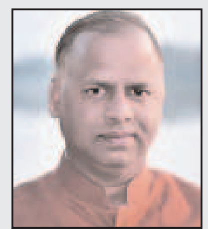
कृष्णमोहन झा

मध्यप्रदेश भाजपा अध्यक्ष पद के लिए पिछले कुछ दिनों से जिन नामों की सबसे अधिक चर्चा थी उस सूची में हेमंत खंडेलवाल का नाम सबसे ऊपर नहीं था परन्तु जब भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने उन्हें निवृत्तमान अध्यक्ष बीडी शर्मा का उत्तराधिकारी बनाने का फैसला किया तो उसके इस फैसले पर शायद पार्टी के उन महत्वाकांक्षी दिग्गज नेताओं को भी आश्चर्य नहीं हुआ होगा जो लंबे अरसे से प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठने का सुनहरा स्वप्न संजोए बैठे थे.

दरअसल लगभग डेढ़ साल पहले पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व ने मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री पद की बागडोर संभालने के लिए जिस तरह डा मोहन यादव के चयन का आश्चर्यजनक फैसला किया था उसे देखते हुए यही प्रतीत हो रहा था कि भाजपा के नये प्रदेशाध्यक्ष पद के लिए भी सबसे अधिक चर्चित नामों से इतर कोई नाम पार्टी का केंद्रीय नेतृत्व तय कर चुका है और नामांकन प्रक्रिया प्रारंभ होते ही जब बैतूल के विधायक हेमंत खंडेलवाल ने नामांकन दाखिल किया तभी यह स्पष्ट हो गया कि वे भाजपा के नये प्रदेशाध्यक्ष बनने जा रहे हैं और स्वयं मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव द्वारा उनके नाम का प्रस्ताव किये जाने के बाद तो इसमें संशय की कोई गुंजाइश ही बाकी नहीं रही कि भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष पद के लिए हेमंत खंडेलवाल मुख्यमंत्री मोहन यादव की भी पहली पसंद थे इसलिए भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष पद की कुर्सी पर बैठने का सौभाग्य भी उन्होंने अर्जित किया. इसमें दो राय नहीं हो सकती कि भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष चयन में मुख्यमंत्री की राय को भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने तरजीह दी और उनकी सहमति से ही भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष पद पर हेमंत खंडेलवाल के निर्विरोध निर्वाचन का मार्ग प्रशस्त हुआ . हेमंत खंडेलवाल को प्रदेश भाजपाध्यक्ष की कुर्सी तक पहुंचाने में संघ की भूमिका भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है.

राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि संघ की मुहर लग जाने के बाद ही हेमंत खंडेलवाल को भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष बनने का सौभाग्य मिला. अब यह तय माना जा रहा है कि आगे आने वाले समय में प्रदेश में सत्ता और संगठन के बीच समन्वय को और मजबूती मिलेगी. हेमंत खंडेलवाल का कार्यकाल तीन वर्षों का होगा. राज्य में निगम और मंडलों के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के रिक्त पदों पर बहुप्रतीक्षित नियुक्तियों को हेमंत खंडेलवाल के सामने पहली चुनौती माना जा रहा है. प्रदेश भाजपाध्यक्ष का चुनाव होते ही निगमों और मंडलों में अध्यक्ष और उपाध्यक्ष पदों पर नियुक्ति के महत्वाकांक्षी नेताओं की सक्रियता बढ़ना स्वाभाविक है. निश्चित रूप से इन नियुक्तियों में हेमंत खंडेलवाल की भूमिका महत्वपूर्ण होगी.

अब यह उत्सुकता का विषय है कि हेमंत खंडेलवाल इस मामले में सरकार के साथ संतुलन बिठाने में कितने सफल होते हैं. 2028 में होने वाले विधानसभा चुनावों और 2029 में होने वाले लोकसभा चुनावों में भाजपा की शानदार विजय सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक पृष्ठभूमि तैयार करने में भी हेमंत खंडेलवाल की राजनीतिक सूझ बूझ और सांगठनिक कौशल की परीक्षा होना है. गौरतलब है कि प्रदेश भाजपा के पूर्व अध्यक्ष बीडी शर्मा के कार्यकाल में भाजपा ने लोकसभा और राज्य विधानसभा के चुनावों में शानदार प्रदर्शन किया था . राज्य में नगरीय निकायों के आगामी चुनावों में भी पार्टी की जीत की पटकथा लिखने की जिम्मेदारी हेमंत खंडेलवाल के कंधों पर है. भाजपा हाईकमान का वरद हस्त , मुख्यमंत्री मोहन यादव के साथ मधुर संबंध और संघ का साथ ,ये तीनों फैक्टर हेमंत खंडेलवाल की राह को आसान बना सकते हैं.

(लेखक राजनैतिक विश्लेषक हैं)

प्रदेश भाजपा के 28 वें अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल के बारे में कहा जाता है कि वे विवादों से दूर रहना पसंद करते हैं . अपने राजनीतिक कैरियर में उन्होंने शायद ही कभी कोई ऐसा बयान दिया होगा जिसे विवादित बयान की श्रेणी में रखा जा सकता है . बात कम , काम ज्यादा ह्व की नीति में विश्वास रखने वाले हेमंत खंडेलवाल को यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिलते ही अब उनके व्यक्तित्व की उन विशेषताओं की चर्चा स्वाभाविक है जिसने उन्हें पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष पद का हकदार बना दिया . हेमंत खंडेलवाल के बारे में यह जगजाहिर है कि जरूरतमंदों की मदद करने में उनके जैसे दिलदार नेता विरले ही होते हैं . जो उनके पास मदद की आस लेकर पहुंचता है वह कभी निराश होकर नहीं लौटता . उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन में आगे बढ़ने के लिए छल-कपट की राजनीति का कभी सहारा नहीं लिया . राजनीति में शुचिता के पक्षधर हेमंत खंडेलवाल ने प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष के रूप में अपनी पार्टी की शुरुआत करते ही पार्टी में दाएं बाएं की राजनीति करने वालों को सचेत करते हुए स्पष्ट कर दिया है कि पार्टी के लिए समर्पित कार्यकर्ताओं को पूरा सम्मान मिलेगा परंतु दाएं बाएं करने वालों को दिक्कत आएंगी . सीधी सी बात है कि हेमंत खंडेलवाल के कार्यकाल में पार्टी की नीतियों और आदर्शों के प्रति निष्ठावान् कार्यकर्ताओं को तरजीह मिलेगी . ऐसे निष्ठावान कार्यकर्ताओं को ही हेमंत खंडेलवाल पार्टी की असली ताकत मानते हैं .

एजबेस्टन की जीत से खुश है देश

मैदान जंग का हो या खेल का, जो आनंद व संतोष किला भेदने से हासिल होता है, वह अलौकिक होता है. एजबेस्टन, बर्मिंघम में भारत ने 1967 व 2022 के बीच आठ टेस्ट मैच हारे थे, जबकि 1986 का टेस्ट ड्रॉ रहा था. जब वर्तमान श्रृंखला के पहले टेस्ट (लीड्स) में इंग्लैंड ने चौथी पारी में 371 के कठिन लक्ष्य को आसानी से पार कर लिया तो हर विशेषज्ञ कह रहा था कि अपने एजबेस्टन किले में इंग्लैंड 2-0 की बढ़त बना लेगा. लेकिन शुभमन गिल के नेतृत्व वाली युवा भारतीय टीम के इरादे कुछ और ही थे. उसने असंभव को संभव कर दिखाया. भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए पहली पारी में 587 का विशाल स्कोर खड़ा किया, जिसमें गिल के शानदार 269 रन शामिल थे. जवाब में इंग्लैंड ने अपनी पहली पारी में 407 रन बनाएं. मुहम्मद सिराज (6 विकेट) व आकाश दीप (4 विकेट) की प्रभावी गेंदबाजी के कारण भारत को 180 रनों की बढ़त मिली. भारत की दूसरी पारी में गिल ने एक बार फिर शानदार बल्लेबाजी करते हुए 161 रनों की पारी खेली और इस तरह एक ही मैच में शतक व दोहरा शतक लगाने वाले वह विश्व के नौवें और सुनील गावस्कर के बाद भारत के दूसरे बैटर बने. टेस्ट की दोनों पारियों में शतक लगाने वाले गिल भारत के आठवें बैटर हैं और एक ही मैच की दोनों पारियों में 150 प्लस का स्कोर करने वाले संसार के एकमात्र बैटर. गिल की बदौलत भारत ने अपनी दूसरी पारी में 6 विकेट पर 427 रन बनाकर पारी घोषित कर दी और इंग्लैंड के सामने 608 रनों का विशाल लक्ष्य रखा. दूसरे शब्दों में भारत ने इंग्लैंड को गेम से ही बाहर कर दिया था. आकाशदीप ने एक बार फिर शानदार गेंदबाजी की और 6 विकेट लेकर इंग्लैंड की कमर तोड़ दी. इंग्लैंड अपनी दूसरी पारी में केवल 271 रन ही बना सका और 336 रनों से हार गया. आकाश दीप ने 187 रन देकर 10 विकेट लिए, जो इंग्लैंड में किसी भी भारतीय गेंदबाज का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है. उनसे पहले यह रिकॉर्ड चेतन शर्मा के नाम था. जिन्होंने 1986 में एजबेस्टन में ही 188 रन देकर मैच में 10 विकेट लिए थे.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

मोबाइल पर खबरों का भ्रमजाल प्रिंट मीडिया पर अधिक विश्वास

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, न्यूज शब्द के 4 अंग्रेजी अक्षर 4 दिशाओं का संकेत करते हैं- नॉर्थ, ईस्ट, वेस्ट और साउथ. अब आप बताइए कि न्यूज पेपर पढ़ने में आपकी कितनी रुचि है. बहुत से लोग कहते हैं कि पढ़ने की क्या जरूरत ! हमने मोबाइल में सरसरी तौर पर देख लिया है.

हमने कहा, ऐसे लोगों को बताइए कि पूरी जानकारी के साथ सही खबर समाचार पत्र में मिलती है. इसके अलावा लेख, अग्रलेख, टिप्पणियां आपकी सूचना का विस्तार करते हुए आपको सोचने के लिए प्रेरित करते हैं. आईएएस परीक्षा पास करने वालों ने अपनी सफलता का श्रेय नियमित अखबार पढ़ने की आदत को दिया है. स्थानीय, प्रांतीय, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय ही नहीं अंतरिक्ष के समाचार भी आपको आपका प्रिय अखबार देता है, जो सदैव अपने पाठकों के साथ होता है. रेडियो और टीवी की खबर आपकी नजरों से ओझल हो जाती है जबकि अखबार या उसकी कतरन आप सहेज कर रख सकते हैं. विश्व की महान घटनाओं के ऐतिहासिक गवाह समाचार पत्र रहे हैं. हमारे महान नेता भी अखबार निकाल चुके हैं. महात्मा गांधी ने हरिजन और यंग इंडिया, लोकमान्य तिलक ने केसरी और मराठा, जवाहरलाल नेहरू ने नेशनल हेराल्ड और कौमी आवाज जैसे अखबार निकाले थे. डॉ. आंबेडकर ने मूक नायक और बहिष्कृत भारत नामक समाचार पत्र निकाले थे. आज के अखबार अधिक जानकारीयुक्त हैं, जिनमें राजनीतिक हलचलों के अलावा खेल, मनोरंजन, व्यापार, फीचर, विज्ञान, मौसम, पर्यावरण की सूचना उपलब्ध रहती है. अखबार अपने पाठक को जागृत और अपडेट रखता है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, हमने देखा है कि पत्रकार से लेकर धोबी तक अपनी बाइक या स्कूटर पर प्रेस लिखवाते हैं. मीडिया पहले निष्पक्ष और सशक्त हुआ करता था, अब वह भक्त बनता जा रहा है. क्योंकि भक्ति में ही शक्ति है.

हमने कहा, आज भी मीडिया जनता की समस्याओं और आवाज को बुलंद करता है. उसके महत्व को कम मत आंकिए. इलेक्ट्रानिक मीडिया आने के बाद भी प्रिंट मीडिया का महत्व कम नहीं हुआ है. प्रिंट मीडिया या अखबारों को ज्यादा विश्वसनीय माना जाता है. यह अखबार ही है जो सवाल करता है कि दक्षिण अमेरिका के देशों का दौरा करने वाले प्रधानमंत्री पूर्वोत्तर के राज्य मणिपुर का दौरा करने के लिए समय क्यों नहीं निकाल पा रहे हैं?

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11957

- डॉ. सागर खादीवाला

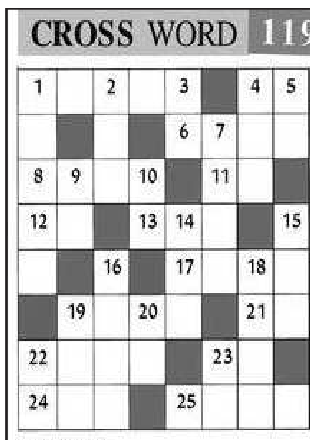

बाएं से दाएं

1. 1. व्याकरण में बहू वचन जिससे एक का बोध हो (सं.) 4. जन्म, उत्पत्ति, संसार, जन्म-मरण का दुख (सं.) 6. शहंशाह जिसने अपनी बेगम की याद में अप्रतिम मकबरा बनवाया 8. पहाड़ के नीचे की भूमि, 11. जूट 12. ईश्वर (उर्दू) 13. डरपोक, भीरू 17. अभिप्राय, आशय, तात्पर्य 19. धार्मिक पूजाओं में मंत्र पढ़कर जल पीना 21. अधिकार, उचित या ठीक बात या पक्ष (उर्दू) 22. दोष या बुराई दूर करना 23. संपूर्ण, समस्त 24. धैर्य 25. भयानक, दहशत पैदा करने वाला

ऊपर से नीचे

1. एक पक्षीय, जिसमें दूसरे पक्ष का विचार न किया गया हो 2. कारण, हेतु 3. वह मानसिक अवस्था जो शराब, भांग आदि के पीने से होती है. 4. वह गीत जिसमें किसी देवता या ईश्वर के गुणों का कीर्तन हो 5. उस जगह, उस स्थान पर 7. हार्दिक कामना (उर्दू) 9. ओष्ट, होंठ (उर्दू) 10. तिलक, व्याख्या 14. नियम से बांधना, अरब का एक प्रदेश 15. पाठ, शिक्षा, नसीहत (उर्दू) 16. अचंभा, आश्चर्य 18. इधर-उधर झोंका खाते हुए चलना, हिलोरे मारना 19. सहारा, वह जिसके सहारे कोई वस्तु बनी या ठहरी हो 20. निषिद्ध, वर्जित 22. अच्छी बुद्धि वाला, पंडित व्यक्ति (सं.) 23. स्वच्छ, निर्मल (उर्दू)

Solution 11956

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक सहयोग मिलेगा, शिक्षा के क्षेत्र में यात्रा होगी, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यो में मन खिन्न रहेगा, व्यापार में व्यर्थ की भागदौड़ एवं व्यय में वृद्धि होगी,मित्र के कारण तनाव रहेगा, वर्ष के अन्त में प्रतिष्ठा एवं यश में वृद्धि होगी, घरेलू कार्यो में व्यस्तता रहेगी, व्यय में नियंत्रण रखें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक तनाव रह सकता है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को कर्मचारियों के सहयोग से कार्यो में सफ्लता मिलेगी, चिन्ता का निवारण होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक कमी का अनुभव होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को पूर्व निर्धारित कार्यो में सफ्लता मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नौकरी में सफ्लता, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शिक्षा अच्छी रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को धार्मिक यात्रा के योग हैं.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक कोमल तथा नर्म शरीर वाला भावुक निडर, और परिश्रमी होगा. अपनी मनमर्जी का मालिक होगा. विद्या के क्षेत्र में उन्नति होगी.

मेष- विवाहित वैवाहिक चर्चाओं को लेकर उत्साही रहेंगे. अटका धन बसूल करलेंगे. पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. व्यापार व्यवसाय अच्छा चलेगा.

वृषभ- जो काम सोचकर निकले हैं, उसे पूरा करके ही दम लेंगे. जो लोग उसके प्रभाव से नतमस्तक होंगे. विश्वसनीयता बनी रहेगी.यश मिलेगा.

मिथुन- लेनदेन के मामले आपसी सहमति से सुलझ जायेंगे. संतान पक्ष से सुख सम्मान मिलेगा. महिला जाति की सलाह लेना उपयोगी सिद्ध होगी.

कर्क- जिस कार्य को आप हल्के में ले रहे थे, वही आपके लिये परेशानी का कारण बनेगा. वैभव विलासिता की वस्तुओं का संचय होगा. लगन और निष्ठा बनी रहेगी.

सिंह- सुख सुविधा पर खर्च होगा. अधिकारियों के मेलजोल का लाभ मिलेगा. स्वास्थ्य पर ध्यान दें. किसी निजी कार्य में व्यस्तता रहेगी.

कन्या- टकराव छोड़कर कार्य पर ध्यान दें, सफ्लता मिलेगी. फिजूल खर्ची रोकने का प्रयास करें. मित्रों, कुटुम्बियों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे. परिश्रम की अधिकता रहेगी.

तुला- उच्च अध्ययन में बेहतर सफ्लता मिलेगी. मांगलिक यात्रा संभव है. कामकाज के प्रति लगन एवं निष्ठा रहेगी. कार्य बनने का योग है.

वृश्चिक- विवादों से बचने का प्रयास करें. सहयोगी आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेगा. आय एवं व्यय में समानता रहेगी. कार्य अधिक रहेगा.

धनु- सहूलियत के हिसाब से कार्य योजना में बदलाव कर सकते है. दुविधा से छुटकारा मिलेगा. सुख साधनों में वृद्धि होगी. कामकाज पूरा होगा.

मकर- जो बात आपको दुखी कर रही है, उसका समाधान मिल जायेगा. शासन सत्ता का लाभ मिलेगा. कार्यो में समस्या का समाधान होगा, आकस्मिक लाभ की प्राप्ति होगी.

बदलाव की स्थिति मेंसहयोगी नाराज हो सकते हैं. जटिल कार्य मित्रों के सहयोग से पूरे होंगे. भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा. स्वास्थ्य संबंधी कष्ट होगा.

मीन- धीमी शुरूआत के बाद काम में तेजी आयेगी, कारोबारी विस्तार की संभावना है. वाहन मशीनरी आदि कार्यो में सफ्लता मिलेगी. जोखिम के कार्यो को टालें.

उदयकालीन ग्रह चाल

पंचांग

रा.मि. 18 संवत् 2082 आषाढ़ शुक्ल चर्तुदशी बुधवासरे रात 1/5, मूल नक्षत्रे दिन-रात, ब्रह्म योगे रात 11/16, गर करणे सू.उ. 5/15 सू.अ. 6/45, चन्द्रचार धनु, शु.रा. 9, 11, 12, 3, 5, 7 अ.रा. 10, 1, 2, 4, 6, 8 शुभांक- 2, 4, 8.

व्यापार भविष्य

आषाढ़ शुक्ल चर्तुदशी को मूल नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, आदि धातुओं में नरमी के बाद तेजी होगी. गुड़ खांड़, शक्कर आदि के भाव में गिरावट आयेगी. जिस वस्तु में 10 बजे के बाद चाल बढ़ेगी, उसी में व्यापार कर लाभ उठायें. भाग्यांक 1599 है.

SUDOKU 7089

		5			8			
	7			3	5			
3						6		
							8	5
	6						1	
4	2							
		1						8
			7	4			3	
			2			7		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7088

5	7	4	1	3	9	6	2	8
2	8	9	6	5	7	1	4	3
3	6	1	2	8	4	5	7	9
9	3	7	8	1	6	4	5	2
6	5	8	4	9	2	3	1	7
1	4	2	5	7	3	8	9	6
7	9	6	3	4	1	2	8	5
4	2	5	9	6	8	7	3	1
8	1	3	7	2	5	9	6	4